इकाई 13

पूंजीवाद का उद्‌गम, विकास और प्रकार्य

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 पूंजीवाद की ऐतिहासिक व्याख्या

13.3 पूंजीवाद का विकास एवं प्रकार्य

13.4 वस्तु उत्पादन एवं पूंजीवादी उत्पादन

13.5 बाजारों एवं उत्पादन का विस्तार

13.6 एकाधिकार, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद

13.7 सारांश

13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- पूंजीवाद के उद्‌गम, विकास एवं प्रकार्यों को समझ सकेंगे; और
- ऐतिहासिक लेखन के माध्यम से पूंजीवाद पर विविध सैद्धांतिक दृष्टिकोण प्रदान कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

पूंजीवाद का प्रयोग अर्थशास्त्रियों द्वारा शुद्ध तकनीकी रूप में उत्पादन की विधियों का प्रयोग करने के लिए किया गया और इसका संबंध मुख्य रूप से पूंजी की प्रकृति के विशिष्ट दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है। पूंजीवाद की इस परिभाषा का संबंध किसी भी तरीके से उन बातों से नहीं है जिनके अंतर्गत उत्पादन के साधनों का स्वामित्व प्राप्त किया जाता है। इससे आशय सिर्फ उनकी आर्थिक उत्पत्ति एवं उनके प्रयोग के विस्तार से है। दूसरी संकल्पना के अनुसार, पूंजीवाद को मुक्त व्यक्ति के विशेष उद्यम की पद्धति के रूप में देखा जाता है। यह ऐसी पद्धति है जहाँ आर्थिक एवं सामाजिक संबंध संविदा से बनते हैं जहाँ मनुष्य अपनी आजीविका को प्राप्ति करने में हर तरीके से स्वतंत्र है और जहाँ कानूनी अनिवार्यताएं एवं प्रतिबंध मौजूद नहीं होते, जिसके द्वारा पूंजीवाद का अर्थ मुक्त प्रतियोगिता भी है।

13.2 पूंजीवाद की ऐतिहासिक व्याख्या

मोटेतौर पर ऐतिहासिक शोध और ऐतिहासिक व्याख्या ने पूंजीवाद की धारणा से जुड़े तीन अलग अर्थों को प्रभावित किया है।

क) उद्यम की आत्मा के रूप में पूंजीवाद

वर्नर सोमबार्ट की रचनाओं से यह विचार प्रसिद्ध हुआ है। उसने पूंजीवाद के सार को इसके आर्थिक ढाँचे या इसके शरीरक्रिया विज्ञान के किसी भी एक पहलू में नहीं पाया। बल्कि उसने इसे जैसा कि गिस्त (Geist) या स्पिरिट (spirit) में प्रदर्शित उसके पहलुओं की संपूर्णता में पाया है, जिसने समग्र युग के जीवन को प्रेरित किया है। यह स्पिरिट उद्यम की स्पिरिट का संश्लेषण है। यह मानते हुए कि विविध समय में विविध आर्थिक व्यवहार सदैव हावी रहे हैं और यह वह स्पिरिट है जिसने पहले अपने लिए और इससे आर्थिक संगठन के लिए उचित स्वरूप सृजित किया है। अतः वर्नर ने पूंजीवाद का मूल मन की अवस्थाओं में पाया है और इसलिए ऐसे आर्थिक स्वरूपों एवं संबंधों के अस्तित्व के लिए मानव व्यवहार सहायक हैं जो कि आधुनिक जगत की विशेषताएं हैं।

पूर्व-पूंजीवादी मनुष्य "प्राकृतिक मनुष्य" था जिसने अपनी प्राकृतिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए आर्थिक गतिविधि पर सोच विकसित की और पूर्व-पूंजीवादी समय में "सभी प्रयासों एवं सभी देखभाल के मध्य में जीवंत मनुष्य का अस्तित्व बना रहा", उसे हर वस्तु के गुण/दोष का पता था। इसके विपरीत पूंजीवाद ने प्राकृतिक मानव को उलटा पुलटा कर दिया, और उसने आदिम और मौलिक दृष्टिकोण तथा समस्त जीवन-मूल्य पूँजी एकत्र करना आर्थिक गतिविधि का प्रबल इच्छा बिंदु माना और एक गंभीर तर्कसंगतता की अवधारणा और सटीक परिमाणात्मक परिकलन की विधियों द्वारा इस छोर तक जीवन में हर बात को गौण समझा।

अधिक सरल शब्दों में मैक्स वेबर ने पूंजीवाद को इस तरह परिभाषित किया कि "ऐसी हर जगह पूंजीवाद मौजूद है जहाँ कहीं मानव समूह की आवश्यकताओं के लिए औद्योगिक प्रावधान है और जिसे उद्यम की विधि द्वारा लागू किया जाता है। वेबर ने पूंजीवाद की स्पिरिट का प्रयोग यह स्पष्ट करने के लिए किया है कि ऐसा व्यवहार जो मुनाफा कमाने की ओर प्रवृत्त है।

ख) वाणिज्यिक पद्धति के रूप में पूंजीवाद

यह ऐसा अर्थ है जो ऐतिहासिक सामग्री के उपचार में अक्सर अस्पष्ट पाया जाता है। यह धारणा स्पष्ट रूप से पूंजीवाद की पहचान दूरस्थ बाजार के लिए उत्पादन के संगठन से जुड़ी हुई है। हालांकि, आरंभिक शिल्पकला गिल्ड जहाँ शिल्पकार अपने उत्पादों को शहर के बाजार में फुटकर के रूप में बेचता है, उसे इस परिभाषा से बाहर रखा जाता है। पूंजीवाद वहाँ मौजूद होता है जहाँ, उत्पादन की क्रिया और फुटकर बिक्री थोक व्यापारी की मध्यस्थता से समय और स्थान के आधार पर एक दूसरे से अलग कर दी जाती है। यह व्यापारी वस्तुओं की बिक्री के लिए पेशगी के रूप में धन देता है ताकि ऐसे माल की बाद में बिक्री करके वह लाभ कमा सके। एक बड़ी सीमा तक यह धारणा जर्मन ऐतिहासिक विचारधारा द्वारा लागू विकास की योजना की श्रेणी में है आती जहाँ उसने मध्यकालीन "प्राकृतिक अर्थव्यवस्था और उसके बाद "धन अर्थव्यवस्था" के बीच मूल अंतर किया। धन अर्थव्यवस्था ने इस बात पर जोर दिया कि "बाजार" ने आधुनिक आर्थिक जगत की वृद्धि में चरणों को परिभाषित किया।

बूशर (Bucher) के शब्दों में, अनिवार्य मानदंड ऐसा संबंध है जो उत्पादन एवं वस्तुओं की उपभोग के बीच मौजूद है। अधिक सटीक शब्दों में, वस्तुओं का आगे जाने का रास्ता उत्पादक से ग्राहक तक है। इसमें पूँजीवाद की परिभाषा की झलक नहीं मिलती जो कि आर्थिक गतिविधि की ऐसी पद्धति है जो मुनाफा लक्ष्य द्वारा हावी रहती है। ऐसे लोग जो आमदनी के नजरिए से धन के निवेश में विश्वास रखते हैं और यह निवेश व्यापार से जुड़ा है या उत्पादन में सूदखोरी से, इसे पूंजीवाद की मौजूदगी कहते हैं। प्रो. नौसबाम पूंजीवाद को "विनिमय अर्थव्यवस्था की पद्धति" के रूप में परिभाषित करते हैं जिसमें मुख्य उद्देश्य असीमित मुनाफा कमाना है। इस पद्धति में उसके अनुसार स्वामी होते हैं और संपत्तिहीन कामगार।"

ग) उत्पादन के विशिष्ट तरीके के रूप में पूंजीवाद

हमारे पास वास्तव में मार्क्स द्वारा दी गई परिभाषा है जिसने पूंजीवाद को न तो उद्यम की स्पिरिट और न ही लाभ के उद्देश्य से धन के प्रयोग में पाया बल्कि मार्क्स के अनुसार यह उत्पादन का विशिष्ट तरीका है। उत्पादन के तरीके के संदर्भ में उसका अर्थ मात्र तकनीक की स्थिति से नहीं है जिसे वह उत्पादनकारी बलों की अवस्था कहता है। बल्कि यह ऐसा तरीका है जिसमें उत्पादन के साधनों को खरीदा गया और इसका अर्थ मनुष्यों के बीच के सामाजिक संबंधों से है जो उत्पादन की क्रिया से जुड़े उनके संबंधों का परिणाम हैं। अतः पूंजीवाद सिर्फ बाजार के लिए उत्पादन की व्यवस्था नहीं है बल्कि जैसा कि मार्क्स ने कहा यह वस्तु उत्पादन की पद्धति है। इसके अलावा यह ऐसी पद्धति है जिसके अंतर्गत श्रम शक्ति स्वयं वस्तु का रूप धारण कर लेती है और जो किसी अन्य वस्तु के विनिमय की तरह बाजार में खरीदी और बेची जा सकती है।

पूंजीवाद का ऐतिहासिक पूर्वापेक्षित बिंदु था, एक वर्ग के हाथों में उत्पादन के साधनों के स्वामित्व पर ध्यान केंद्रित करना। यह वर्ग ऐसा है जिसमें समाज का छोटा वर्ग ही शामिल है। इसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर संपत्तिहीन वर्ग उभरता है जिसके लिए उसकी आजीविका का एक

मात्र स्रोत सिर्फ अपनी श्रम शक्ति की बिक्री करना था। इसी आधार पर कानूनी बाध्यता के बजाय मजदूरी करारनामे के आधार पर संपत्तिहीन वर्ग द्वारा उत्पादनकारी गतिविधि को पूरा किया गया। यह स्पष्ट है कि ऐसी परिभाषा स्वतंत्र हस्तकारी उत्पादन की पद्धति को इससे बाहर रखती है जहाँ शिल्पकार के उत्पादन के अपने निजी छोटे-छोटे औजार होते हैं और जो अपने सामान की बिक्री खुद करता है। कारीगर के रोजगार पर किसी भी हद तक विश्वास के अतिरिक्त यहाँ स्वामित्व एवं कार्य के बीच कोई अलगाव नहीं है मानव श्रम शक्ति के बजाय वस्तुओं का क्रम-विक्रय उसकी चिंता का प्राथमिक मुद्दा था।

व्यापार और उधार देना और व्यापारियों या पैसा लगाने वाले विशिष्ट वर्ग की मौजूदगी इस परिभाषा के प्रयोग को दूसरों से अलग बनाती है, यद्यपि ये सामर्थ्यवान लोग हैं लेकिन पूंजीवादी समाज के निर्माण में यह पर्याप्त नहीं है। हालांकि पूंजीधारी लोभी पर्याप्त नहीं हैं, उत्पादन में अधिशेष मूल्य के निर्माण के लिए उनकी पूंजी का प्रयोग श्रम को उपयोग में लाने के लिए अवश्य किया जाना चाहिए।

घ) पूंजीवाद के उद्भव पर चिंतन

सोमबर्ट की पूंजीवादी स्पिरिट की संकल्पना और वाणिज्यिक पद्धति के रूप में पूंजीवाद की संकल्पना में कुछ सामान्य निश्चित दोष हैं।

- ये संकल्पनाएँ धन के लोभी निवेश पर केंद्रित हैं।
- ये संकल्पनाएं इतिहास के किसी भी एक युग को सीमित बनाने में अपर्याप्त हैं।
- और ये ऐसे निष्कर्ष की ओर प्रवृत्त हैं कि इतिहास के लगभग सभी काल कम से कम कुछ हद तक पूँजीवादी हैं।

इसके अलावा सोमबर्ट और वेबर एवं उनकी विचारधारा से जुड़ी कठिनाई है कि यदि पूंजीवाद आर्थिक स्वरूप के रूप में पूंजीवादी स्पिरिट की सृजना है तो पूंजीवादी स्पिरिट की उत्पत्ति सर्वप्रथम पूंजीवाद की उत्पत्ति से पहले स्पष्ट की जानी चाहिए। यदि यह पूंजीवादी स्पिरिट स्वयं एक ऐतिहासिक उत्पाद है तो किसने ऐतिहासिक मंच पर इसकी छवि को उत्पन्न किया? मस्तिष्क की विविध अवस्थाओं में ऐसी बातों के अचानक आने के अलावा इस पहेली का कोई संतोषजनक उत्तर अभी तक नहीं मिला है।

बॉक्स 13.1: प्रोटेस्टेंटवाद एवं पूंजीवाद

ऐसे कारण की खोज ने असंतोषजनक और परिणामहीन वाद-विवाद को जन्म दिया है कि क्या यह सही है कि (जैसा कि वेबर और ट्रोइटश का दावा है) प्रोटेस्टेंटवाद ने पूंजीवादी स्पिरिट का उदय किया है। यह कहने के बजाय जैसा कि सोमबर्ट कहते हैं कि यह मुख्यतया यहूदियों की सृजना है। यह कहने के लिए बहुत से कारक हैं कि पूंजीवाद सुधारवाद की उपज है हालांकि विचार की दृष्टि से यदि नयी आर्थिक व्यवस्था के आविर्भाव को स्पष्ट करना है तो यह विचार पहले से ही भावी पद्धति के सार में प्रस्तुत किया जाना चाहिए। दूसरी तरफ इतिहास में पूंजीवाद की परिभाषा का वास्तविक प्रयोग उस ओर तेजी से बढ़ा है जिसे सर्वप्रथम मार्क्स द्वारा विकसित एवं अपनाया गया।

आर्थिक गतिविधि के प्रेरक बिंदु के रूप में लाभ पर ध्यान केंद्रित करने की बजाय पूंजीवादी एवं श्रमजीवी के बीच नये किस्म के वर्ग विभेदन के आविर्भाव पर लगातार जोर दिया जा रहा है। उत्पादक और पूंजीवादी के बीच के संबंध पर ध्यान तेजी से केंद्रित किया जा रहा है जो कि 19वीं शताब्दी की पूर्ण परिपक्व औद्योगिक पद्धति में स्वामी और मजदूर के बीच के रोजगार संबंध के समान है। समग्र रूप से यह ऐसी सामग्री की वजह से है जिसे शोध ने खोजा है और जिसने आधुनिक युग के अनिवार्य विभेदन के लिए अपनी खोज में इतिहासकारों का ध्यान आकृष्ट करने की ओर जोर दिया है, बजाय इसके कि पहले से ही मार्क्स की रचनाओं द्वारा इस ओर प्रवृत्त किया गया है। अतः औद्योगिक क्रांति से पहले कुछ शताब्दियों में पूंजीवाद के अनिवार्य बिंदुओं के आधार पर श्री लिप्सन का कहना है कि पूंजीवाद की बुनियादी विशेषता मजदूरी पद्धति है जिसके अंतर्गत

कामगार को स्व-निर्मित सामग्री में स्वामित्व का अधिकार है। कामगार अपनी श्रम का फल नहीं बेचते बल्कि सिर्फ श्रम को ही बेचते हैं जिसका आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्व है।

13.3 पूंजीवाद का विकास एवं प्रकार्य

क) पूंजीवाद की अवस्थाएँ

पूंजीवाद का विकास, परिपक्वता के विविध स्तरों द्वारा विविध अवस्थाओं में वर्गीकृत है। इनमें से प्रत्येक को विशिष्ट गुणों द्वारा पहचाना जाता है जब हम अवस्थाओं का पता लगाने का प्रयास करते हैं और इनमें से किसी एक का चयन पूंजीवाद की आरंभिक अवस्था पर ध्यान केंद्रित करने के लिए किया जाता है। यदि हम उत्पादन के विशिष्ट तरीके के रूप में पूंजीवाद की बात करते हैं तो यह कहा जा सकता है कि हम व्यापारी वर्ग और बड़े पैमाने की ट्रेनिंग के नजर आने के पहले संकेतों से इस पद्धति का अनुमान नहीं लगा सकते और हम मर्चेंट पूंजीवाद की विशिष्ट अवधि पर बात नहीं कर सकते। जब उत्पादन के तरीके में परिवर्तन होता है तभी हम पूंजीवादी अवधि की शुरुआत देखते हैं। मार्क्स का प्रमुख कार्य "पूँजी" शब्द में निहित है। मार्क्स ने अपने जीवन के बहुत से वर्ष पूंजीवाद के विश्लेषण पर खर्च किए क्योंकि वह इस बात से संतुष्ट था कि पूंजीवाद की व्यावहारिक समीक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए संपूर्ण सैद्धांतिक समझ की जरूरत थी। राजनीतिक अर्थव्यवस्था **एडम स्मिथ** और **डेविड रिकार्डो** जैसे क्लासिकी बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित आर्थिक सिद्धांत के लिए जोर पकड़ता है। मार्क्स ने इनके सिद्धांतों का बारीकी से अध्ययन किया। उसने इनके सिद्धांतों से शुरुआत की और मूल्य, वस्तु, धन, पूंजी आदि जैसी उनकी श्रेणियों पर ध्यान देते हुए इनका गूढ़ आलोचनात्मक अध्ययन किया। मार्क्स पूंजीवाद की असल प्रकृति को उभारने की ओर अग्रसर है। इस प्रक्रिया में वह पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की सशक्त वैज्ञानिक वैधता को तोड़ देता है और न सिर्फ पूंजी के विश्लेषण के लिए नया वैज्ञानिक मॉडल प्रदान करता है बल्कि पूंजीवाद की संपूर्णता की बुनियादी समीक्षा के लिए आधारशिला भी बनाता है।

ख) पूंजीवाद की राजनीतिक अर्थव्यवस्था

पूंजीवाद का अध्ययन करने और इसके विशिष्ट स्वरूप को समझने के दो तरीके हैं और पूर्ण समझ प्राप्त करने के लिए हमें दोनों तरीकों को समझना जरूरी है। पहला तरीका है, इसके इतिहास का अध्ययन करना, इसकी उत्पत्ति कैसे हुई और इसका विकास कैसे हुआ, इन बातों को समझना और किन परिस्थितियों में इसे विकसित किया गया और इसका परिणाम क्या हुआ। इसके लिए न सिर्फ आर्थिक प्रगति का अध्ययन जरूरी है बल्कि समग्र **बुर्जुआ समाज** के विकास को भी समझना जरूरी है। यह एक विस्तृत क्षेत्र है क्योंकि प्रत्येक देश का इस संदर्भ में अपना एक निजी इतिहास होता है। लेकिन ऐसे अध्ययन पूंजीवाद का अध्ययन करने के दूसरे तरीके का पूंजीवादी समाज की आर्थिक संरचना के सुव्यवस्थित विश्लेषण का नाम देते हैं। ऐसे मामले में शुरुआत ऐतिहासक उत्पत्ति संबंधी बिंदुओं की बजाय समग्र रूप से पूंजीवादी पद्धति से होनी चाहिए। यह वही उपागम है जिसका अनुसरण मार्क्स "पूँजी" में करता है।

बॉक्स 13.2 : द्वंद्वात्मक तर्क

ऐतिहासिक रूप से कृषि एवं धरातली किराए से शुरुआत करनी चाहिए। पूंजी को आरंभिक एवं अंतिम बिंदु मानते हुए मार्क्स द्वंद्वात्मक तर्क के पथ का अनुसरण करते हैं। यह विधि पहले से पद्धति की ठोस संपूर्णता को मान कर चलती है लेकिन विश्लेषण की प्राप्ति के लिए यह एक भाग के बाद दूसरे भाग को तब तक लेती है जब तक कि यह ऐसी बातों का पता न लगा ले कि किस प्रकार सभी पहलू, सभी संबंध, सभी श्रेणियाँ, संपूर्णता के भागों के रूप में काम करते हैं। मार्क्स इसे अमूर्त से मूर्त की ओर उभरने की विधि कहते हैं। पृथक भाग वास्तविक और ठोस लग सकता है लेकिन अधिक जटिल वास्तविकता से यह अलग है। यह तो बहुत से निश्चयों एवं संबंधों की समग्र संपूर्णता है जो ठोस वास्तविकता को गठित करती है।

पूंजी इस द्वंद्वात्मक तर्क के अनुसार निर्मित होती है। खंड 1 "द प्रोसेस आफ प्रोडक्शन ऑफ कैपिटल " के विश्लेषण को अर्पित है। हम "पूंजी" विषय में मार्क्स द्वारा अग्रेषित सभी सिद्धांतों की चर्चा नहीं कर सकते और न ही पूंजीवाद के ऐतिहासिक विकास की विशिष्टताओं पर नजर डाल सकते हैं। हम सिर्फ कुछ प्रमुख सैद्धांतिक वक्तव्यों को ही उजागर कर सकते हैं और ऐतिहासिक प्रक्रिया के कुछ प्रमुख पहलुओं पर भी ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

13.4 वस्तु उत्पादन एवं पूंजीवादी उत्पादन

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की पहली विशेषता है कि यह वस्तु उत्पादन की किस्म है अर्थात बिक्री के लिए उत्पादन, बाजार के लिए उत्पादन। यही वजह है कि मार्क्स "वस्तुओं" के विश्लेषण की शुरुआत करता है। लेकिन सभी वस्तु उत्पादन से पहले से ही पूंजीवादी उत्पादन नहीं होते। वस्तु उत्पादन मानव इतिहास में हजारों वर्ष पूर्व उभरा जबकि पूंजीवाद का उदय सिर्फ कुछ सैंकड़ों वर्ष ही पुराना है। आदिम समाज में सभी उत्पादन प्रत्यक्ष प्रयोग के लिए हैं। बाजार में विनिमय के लिए कोई उत्पादन नहीं है। वस्तुओं का उत्पादन, विनिमय के लिए वस्तुओं के उत्पादन की तुलना में धीमी गति से हुआ है। लंबे समय के लिए यह केवल अधीनस्थ भूमिका को ही निभाता है । सिर्फ पूंजीवादी समाज में वस्तु उत्पादन का पूर्णतया प्रबल स्वरूप बन जाता है। यह सामान्यीकृत बन जाता है।

अभ्यास 13.1

क्या वस्तु उत्पादन हाल ही की परिघटना है? इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

साधारण वस्तु उत्पादन के तरीके का विश्लेषण करते समय मार्क्स उद्देश्य को इस प्रकार व्यक्त करता है: खरीदने के लिए बिक्री करना। खेतिहर अन्न की खरीदारी के लिए कुछ अन्न की बिक्री करना चाहता है। बुनकर अन्न की खरीदारी के लिए कुछ कपड़ा बेचना चाहता है। इस अभियान को 'सीएमसी' के रूप में दर्शाया जा सकता है अर्थात कमोडिटी-मनी-कमोडिटी। मनुष्य एक वस्तु की खरीद के लिए एक वस्तु की बिक्री करता है। धन विनिमय का साधन है ताकि लेन-देन की प्रक्रिया को आसान बनाया जा सके । सी और सी की दो वस्तुओं का मूल्य समतुल्य है। हालांकि बाजार में हम न सिर्फ खेतिहर और शिल्पकार को बल्कि व्यापारी को भी पाते हैं। वह बाजार में वस्तुओं के साथ नहीं बल्कि धन के साथ आता है। इस धन के साथ वह कुछ उत्पाद खरीदता है ताकि उसे उच्च कीमत पर बेच सके। इस अभियान को वर्धित मूल्य के साथ मनी-कमोडिटी-मनी के रूप में दर्शाया जा सकता है। ऐसा धन जो अधिशेष मूल्य के साथ बढ़ाया गया है, उसे पूंजी कहते हैं। पूंजी व्यापारिक पूंजी या सूदखोरी या साहूकार की राशि के रूप में पूंजीवाद से बहुत पहले से ही विराजमान है। इनमें अंतर इतना है कि इस किस्म की पूंजियों वस्तुओं के विनिमय में अपनी भूमिका, वितरण के क्षेत्र में बाजार में इन्हें घुमाने के रूप में अपनी भूमिका से अपना लाभ उत्पन्न करती हैं। सूदखोर एवं मर्चेंट ऐसे अधिशेष मूल्य के प्रमुख भाग को ले लेते हैं लेकिन वे उत्पादन को नियंत्रित नहीं करते।

उत्पादन का पूंजीवादी तरीका अस्तित्व में आता है जब पूंजी उत्पादन के क्षेत्र में घूमती है, जब यह उत्पादन के साधनों को नियंत्रित करती है और उत्पादन पर हावी होने लगती है। यह एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो प्राचीन यूरोप से आरंभ हुई। इसकी बुनियादी विशेषताएं हैं -

- उत्पादक का अपने उत्पादन के साधनों से अलग हो जाना;
- बुर्जुआ (निर्धन) वर्ग के हाथों में उत्पादन के साधनों का टिकना; और
- अन्य वर्ग का गठन जिसका अपनी श्रम शक्ति की बिक्री के सिवाय आजीविका निर्वाह का कोई और साधन नहीं है।

पूंजीवादी उत्पादन तब तक असंभव है जबकि उत्पादक, उत्पादन के साधनों पर अपना स्वामित्व कायम रखें या उन्हें नियंत्रित करते रहें। जब तक कि एक शिल्पकार, बुनकर या बढ़ई के पास उसके अपने औजार एवं कार्यशाला है तब तक वह स्वैच्छिक रूप से अपनी श्रम शक्ति की बिक्री नहीं करेगा और किसी भी फैक्टरी में काम नहीं करेगा। जब तक किसी कृषक के पास भूमि उपलब्ध होगी तब तक श्रमिक के रूप में देहाड़ी पर काम करने की बजाय वह अपने खेत पर काम करना पसंद करेगा। पूंजीवादी उत्पादन को ऐसे कामगारों की जरूरत पड़ती है जो अपनी श्रम शक्ति की बिक्री करते हैं। इसलिए इसे उत्पादकों और उत्पादन के साधनों को अलग करने की जरूरत है ताकि उत्पादकों को आर्थिक अनिवार्यता से अपनी श्रम शक्ति की बिक्री के लिए बाधित किया जाए।

यह पृथक्करण विविध तरीकों से हुआ है आमतौर पर अत्यंत नृशंस एवं खूनी ढंग से असल इतिहास हैवान ही है जो जीतता है, दूसरों को गुलाम बनाता है, डकैती, हत्या आदि करता है। मार्क्स ने कैपिटल I, भाग-VIII, अध्याय 26 में इस पर अपनी मुहर लगाई है जिसमें उसने "आदिम संचयन " को दर्शाते हुए कहा है कि यह और कुछ नहीं बल्कि उत्पादक और उत्पादन के साधनों को अलग करने की ऐतिहासिक प्रक्रिया है।

पृथक्करण की इस प्रक्रिया का नतीजा है, दो वर्गों का गठन जो पूंजीवादी समाज के दो छोरों को बनाती है। एक ओर हम पाते हैं बुर्जुआ स्वामियों का ऐसा वर्ग, जिसके हाथों में उत्पादन के साधन हैं। दूसरी तरफ हम श्रमजीवी वर्ग को पाते हैं जिसे अपनी श्रम शक्ति की बिक्री करके अपनी आजीविका अर्जित करनी है। मध्यस्थ वर्गों जैसे अन्य वर्ग भी हैं जो विभिन्न तालमेलों में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। लेकिन पूंजीवाद तभी संभव है जब एक तरफ स्वामियों का वर्ग हो और दूसरी तरफ गैर-स्वामियों का। दूसरा, यह उत्पादन के साधनों से जुड़ा संबंध है जो इन वर्गों, स्वामित्व/ नियंत्रण और गैर-स्वामित्व को विशेषता प्रदान करता है। यह मात्र धनी और निर्धन का प्रश्न नहीं है। सभी गरीब मनुष्य कामगार नहीं होते। वे लघु शिल्पकार, खोमचे वाले या ऐसे कृषक हो सकते हैं जिनके पास अभी भी भूमि का अपना एक टुकड़ा है। एक औद्योगिक कामगार अधिक अर्जित कर सकता है और फिर भी वह श्रमजीवी वर्ग का सदस्य है जबकि निर्धन कृषक स्वामी ऐसा नहीं हो सकता।

श्रमजीवी वर्ग सजातीय नहीं है। इसमें विभिन्न भाग होते हैं जैसे कुशल और अकुशल और देहाड़ी पर काम करने वाले या मासिक आय प्राप्त करने वाले या गरीबी रेखा से नीचे या ऊपर के लोग। इन्हें जो एकजुट करता है, वह है कि इन सभी को विविध दशाओं के अंतर्गत अपनी श्रमशक्ति को बेचने के लिए बाधित किया जाता है। श्रमजीवी वर्ग अपनी सीमा रेखा तब पार करता है जब वह अपने वेतन में से अपनी निजी दुकान खरीदने के योग्य हो जाता है या लघु साहूकार बन जाता है या घर किराए पर देने लगता है।

13.5 बाजारों एवं उत्पादन का विस्तार

इसके अलावा पूंजीवाद के विकास की पूर्व शर्त, बाजार का विस्तार करना है। पूर्व-पूंजीवादी, छोटे पैमाने के वस्तु उत्पादन सीमित बाजार के लिए काम करते हैं। 16वीं शताब्दी में वाणिज्यिक क्रांति ने यूरोप में अपना कदम रखा। व्यापार के नये मार्गों की खोजों ने औपनिवेशिक दशाओं के अंतर्गत विश्वव्यापी व्यापार के वास्को-डि-गामा युग का आरंभ किया। बाजार के विस्तार ने बड़े पैमाने के उत्पादन को और पूंजीवाद की वृद्धि को बढ़ावा दिया है।

पूंजीवादी उद्यमी तभी उत्पन्न हो सकते हैं जब उत्पादन निश्चित स्तर तक पहुंच गया हो। गिल्ड मास्टर और उसके कारीगरों एवं प्रशिक्षुओं की सीमति संख्या इतना उत्पादन नहीं करती कि वे प्रचुर मात्रा में अपना काम करना शुरू कर दें। उद्यम के निदेशक के रूप में पूंजीवादी अधिकाधिक उत्पादन के साथ उभरता है।

क) अधिशेष मूल्य का उत्पादन

वस्तु उत्पादन विस्तार के लिए बाजार और उत्पादन के साधनों के स्वामियों के वर्ग के हाथों में न्यूनतम पूंजी और श्रम बिक्री के लिए तैयार कामगारों की पर्याप्त संख्या के साथ पूंजीवादी उत्पादन आगे विकसित हो सकता है। एक बार सफलता की प्राप्ति करने से यह अपनी अंदरुनी गतिशीलता से आगे और आगे विकसित हो सकता है। मार्क्स इसे मुनाफा कमाने की अनंत प्रक्रिया कहते हैं। यह कैसे काम करती है? मार्क्स का इस पर मुख्य उत्तर अधिशेष मूल्य के उत्पादन के उसके सिद्धांत में निहित है।

बॉक्स 13.3 : पूंजीवादी उद्यमी

पूंजी गठित होती है जब धन सिर्फ विनिमय का साधन बन जाता है जो वस्तुओं के विनिमय को सुविधाजनक बनाता है और नये मूल्यों के जुड़ने के साथ जब धन बढ़ जाता है, वह आर्थिक लेन-देन का उद्देश्य बन जाता है। सूदखोर और व्यापारी इसे बाजार के दायरे में प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। पूंजीवादी उद्यमी इस उद्देश्य के लिए उत्पादन की प्रक्रिया को अधीनस्थ करके ऐसा करता है। वह कच्चा माल खरीदता है और श्रम के साधनों आदि की भी खरीद करता है और श्रम शक्ति की खरीद करता है। उत्पादन-साधनों का स्वामी इनके उत्पादों को अपना बना लेता है और इन्हें बेचने के बाद मुनाफा कमाता है। श्रमिकों को उनके श्रम के लिए मजदूरी दी जाती है। यह अतिरिक्त पूंजी कहाँ से आती है? क्या धन में ताकत है जिससे अधिक धन बनाया जा सके? क्या यह पूंजीवादी के दिमाग की उपज है? निस्संदेह कभी कभार ऐसी चालाकी से अप्रत्याशित लाभ होता है। लेकिन यह मुनाफा कमाने की सामान्य प्रक्रिया का वर्णन नहीं करता। विविध कारणों के लिए आकस्मिक रुकावटें भी आती हैं। मार्क्स एक ऐसी निश्चित वस्तु में छिपे मुनाफे को देखता है जो कि पूंजीपति बाजार से खरीदता है। वस्तु श्रम शक्ति है।

मार्क्स के लिए अदत्त अधिशेष - श्रम का निचोड़ ऐसी प्रमुख बात है जिससे समाज के विविध स्वरूपों को समझा जा सकता है और सामंतवादी समाज में भूपत्ति का अदा किराए और एशियाई समाज में राज्य को अदा करों को समझने में भी इसका ज्ञान होना जरूरी है। इस निचोड़ को लागू करने के लिए इन स्वरूपों को विविध राजनीतिक संरचनाओं के साथ जोड़ने की जरूरत है। पूंजीवादी समाज में अधिशेष मूल्य को एक नये तरीके से अपना बनाया जा सकता है। यह अब गुलामों या सर्फों की अदत्त श्रम नहीं है बल्कि श्रमिकों का अदत्त श्रम है। पूंजीवादी समाज में कामगार मजदूरी प्राप्त करते हैं। ऐसा लगता है कि इन्हें अपने काम के लिए अदाई की गई है। यह पूंजीवाद की बड़ी बहकावट है जो शोषण की प्रक्रिया को ढक लेता है। असल में इन्हें इनके काम के लिए पैसे नहीं दिए जाते बल्कि श्रम शक्ति के प्रयोग के लिए मजदूरी दी जाती है। उनकी मजदूरी की तुलना में वे जो बनाते हैं उसका अधिक महत्व है। मजदूरी सिर्फ अनिवार्य श्रम की लागत को पूरा करती है जो कि श्रमिकों के रखरखाव के लिए जरूरी है। वह जो उत्पादन करता है, उसका मूल्य कहीं अधिक है। पूंजीवादी अधिशेष को अपना बना लेता है। यह संभव है क्योंकि श्रम शक्ति ऐसी वस्तु है जिसे बाजार में खरीदा जा सकता है।

ख) मुनाफा कमाने की न कभी खत्म होने वाली प्रक्रिया

पूंजीवादी हर समय अधिशेष मूल्य की दर को बढ़ाने का प्रयास करते हैं। अब हम प्रश्न उठाते हैं कि क्यों पूंजीवादी को मुनाफा कमाने के लिए ऐसे बेचैन ढंग से काम में शामिल करना पड़ता है। इसके पीछे असीमित लालच है जो कि पूंजीवाद द्वारा विकसित होता है। लेकिन इस लालच को शिक्षाप्रद ढंग में नहीं लेना चाहिए। लेकिन पूंजीवादियों के रूप में पूंजी संचय चलता रहेगा अन्यथा वे दिवालिया हो जाएंगे। यह दबाव निजी पूंजीपत्तियों के बीच की होड़ में उत्पन्न होता है जो कि पूंजीवाद की विशेषता है।

यदि पूंजीपति नई प्रौद्योगिकी में निवेश नहीं करता, यदि वह उत्पादन का विस्तार नहीं करता तो दूसरे इसका लाभ उठाकर आगे बढ़ जाएंगे और बाजार पर धाक जमा लेंगे और वह पीछे रह

जाएगा। वह अपनी निजी खपत के लिए मुनाफे को नहीं अपना सकता या कुछ गैर उत्पादक उद्देश्यों के लिए ही इसे खर्च नहीं कर सकता। उसे इसका एक हिस्सा अवश्य पुनः निवेश के लिए अलग रखना चाहिए। यह हिस्सा नयी अतिरिक्त पूंजी बन जाता है। अतः उसे पूंजी संचित करनी पड़ती है। यह बड़े पैमाने के उत्पादन में पूंजी पर ध्यान केंद्रित करने की ओर प्रवृत्त है। यह संकेंद्रण पुनः कुछ गिने-चुने लोगों के हाथ में पूंजी के स्वामित्व एवं नियंत्रण के केंद्रीकरण के लिए आधार बन जाता है।

अभ्यास 13.2

पूंजीवादी उत्पादन में नई प्रौद्योगिकी की क्या भूमिका है? क्या यह पूंजी के स्वामित्व एवं नियंत्रण में बदलाव लाती है?

बाजार ऐसे जंगल की तरह है, जहाँ जो सबसे बेहतर होगा उसी का अस्तित्व बना रहेगा। इसका अर्थ है पूंजी के केंद्रीकरण के लिए छोटे लोगों का निराकरण। बड़े पूंजीपति और अधिक बड़े बन जाते हैं और उनकी संख्या गिनी-चुनी होती है। अब हम विचार करते हैं कि श्रम पर पूंजी के संचयन के नियम का क्या प्रभाव है? पूंजी संचयन का अर्थ है, श्रम शक्ति के लिए वर्धित माँग। इससे श्रम की कीमत में बढोतरी हो सकती है। संतुलित पैमाने पर मजदूरी एक समय में बढ़ सकती है । लेकिन यह श्रमिक की बुनियादी स्थिति में कोई बदलाव नहीं लाती जो कि पूर्णतया पूंजीपति पर निर्भर होता है। पूंजीवाद न सिर्फ श्रम के लिए माँग सृजित करता है बल्कि मशीनीकरण को लागू करके बेरोजगारी भी उत्पन्न करता है। इस तरीके से यह बेरोजगारों की 'औद्योगिक रिजर्व सेना ' सृजित करता है जिसका अस्तित्व पूंजीपत्तियों के लिए यह संभव बनाता है कि वे रोजगारशुदा की मजदूरी को ,नियंत्रण मे रख सकें। इस आधार पर श्रम की आपूर्ति एवं माँग का नियम पूंजी की तानाशाही व्यवस्था को पूरा करता है।

एक अन्य कारण भी है कि क्योंकि पूंजीपति को उत्पादन का असीमित विस्तार करना पड़ता है। पूंजी के संचयन की प्रक्रिया में, निरंतर (constant) पूंजी का भाग बढ़ जाता है और परिवर्तनशील पूंजी के संबंध में अधिक बड़ा हो जाता है। इसे पूंजी के जैविक संघटन में वृद्धि होना कहते हैं। मशीनीकरण की प्रक्रिया में निरंतर पूंजी बढ़ जाती है और परिवर्तनशील पूंजी बनाने वाले अधिशेष मूल्य का भाग अपेक्षाकृत निम्न हो जाता है तो मार्क्स 'पतन के लिए मुनाफे की औसत दर की प्रवृत्ति' को मान कर चलता है। पूंजीपति का जितना विस्तार होता है उसके मुनाफे की दर उतनी ही निम्न बन जाती है। उत्पादन के पैमाने को बढ़ाकर ही वह अपने फायदे को बढ़ा सकता है।

लेकिन पूंजीवादी उत्पादन के निरंतर बढ़ते विस्तार से आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है। यह पूंजीवाद का अन्य नियम है जिसे मार्क्स स्थापित करता है। ये संकट पूंजी और श्रम के बीच के बुनियादी वाद-विवाद का परिणाम हैं। अपनी जगह बनाए रखने के लिए पूंजी को संचित करना और उसका विस्तार करना आवश्यक है। इसके बृहद उत्पादन के विस्तार के लिए बड़े पैमाने में खरीदारों की प्राप्ति करना इसके लिए अत्यावश्यक है। ये जनता बड़ी संख्या में कामगार हैं। ये तभी खरीद सकते हैं यदि उन्हें मजदूरी काफी अधिक मिलती है। लेकिन उच्च मजदूरी पूंजीपतियों के मुनाफे की दर को घटा देती है। प्रत्येक निजी पूंजीपति, इसलिए अपने निजी कामगारों को निर्धन रखना ही पसंद करेगा और बाकी के कामगारों को उसके उत्पादन खरीदने के काबिल होने के रूप मे देखना पसंद करेगा।

13.6 एकाधिकार, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद

पूंजीवाद की गतिशीलता और पूंजी संचित करने के लिए स्थायी दबाव डालने से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की विशेषता में बदलाव आता है। मुक्त होड़ के युग ने उत्पादनकारी बलों और बड़े पैमाने पर उत्पादन का व्यापक विस्तार किया। लेकिन इससे पूंजी का एक साथ संकेंद्रण एवं केंद्रीकरण होता है जिससे एक नई स्थिति उत्पन्न होती है जिसमें बड़ी कंपनियों की घटती संख्या या कंपनियों का समूह बाजार में एकाधिकार स्थितियों पर अपनी पकड़ कायम करने के योग्य थीं।

एकाधिकार पूंजीवाद-उत्पादक-संघ, ट्रस्ट, नियंत्रक कंपनियां और विलयन के माध्यम से विकसित हुए। पूंजीवादी, मुक्त होड़ के प्रभावों के विरुद्ध मुनाफे की दर को सुरक्षित करने की ओर बढ़े। एक बार यदि बाजार एकाधिकार के नियंत्रण में हो तो उत्पादन को बढ़ाने की बजाय उत्पादन को सीमित करके उच्च मुनाफा कमाया जा सकता है । इसी तरह प्रौद्योगिकीय सुधारों को पेश करने की बजाय इन्हें यथापूर्व स्थिति में रखने से और उत्पादों की गुणवत्ता को बढ़ाने की बजाय इसे कम करके भी मुनाफा कमाया जा सकता है। मार्क्स का पूर्वानुमान था कि एकाधिकारों का उदय, पूंजी के संकेंद्रण का परिणाम था। लेकिन मार्क्स की मृत्यु के बाद ही एकाधिकार पूंजीवाद प्रबल हुआ।

बहुत से मार्क्सवादियों ने पूंजीवाद के इस नये चरण के विश्लेषण के लिए सैद्धांतिक ढाँचा प्रदान करने का प्रयास किया। आस्ट्रियन मार्क्सवादी रूडोल्फ हिल्फर्डिंग ने 1910 में अपने अध्ययन "फाइनान्स कैपिटल - द लेटेस्ट फेज ऑफ कैपिटलिस्ट डेवलपमेंट" को प्रकाशित किया। पोलि जर्मन मार्क्सवादी **रोजा लक्जमबर्ग** ने 1913 में अपने अध्ययन "द एक्युम्यूलेशन ऑफ कैपिटल" नामक अध्ययन को प्रकाशित किया और लेनिन ने 1916 में अपने अध्ययन "इम्पीरियलिज्म, द हाइएस्ट स्टेज आफ कैपिटलिज्म" को पूरा किया।

लेनिन ने हिलफर्डिंग और बुखारिन अर्थात दोनों के लेखन का फायदा लिया, यद्यपि कुछ बातों पर वह उनसे अलग था। जैसे, हिलफर्डिंग से वह इस बात पर सहमत नहीं था कि एकाधिकार, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भीतर से मुक्त प्रतियोगिताओं (होड़) को समाप्त कर देगा।

बॉक्स 13.4 : साम्राज्यवाद की बुनियादी विशेषताएँ

- उत्पादन और पूंजी का संकेंद्रण ऐसी उच्च अवस्था तक सीमित हुआ है कि इसने एकाधिकारों को सृजित किया है जो आर्थिक जीवन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।
- औद्योगिक पूंजी के साथ बैंक पूंजी का विलय, और वित्तीय कुलीन तंत्र की इस वित्तीय पूंजी के आधार पर निर्माण।
- पूंजी का निर्यात जो कि वस्तुओं के निर्यात से भिन्न होता है, विशेष महत्व रखता है।
- अंतरराष्ट्रीय एकाधिकारी पूंजीवादी संघों का गठन जो अपने आप में ही विश्व को बाँट लेते हैं; और
- सर्वोच्च पूंजीवादी शक्तियों के बीच समग्र विश्व के प्रादेशिक विभाजन को पूरा किया जाता है।

13.7 सारांश

पूंजीवाद की उत्पत्ति एवं विकास का पता एवं इसकी समझ विविध मानकों के आधार पर सामाजिक चिंतकों द्वारा विकसित की गई। हालांकि पूंजीवाद पर मार्क्स की समझ ने किन्हीं अन्य सिद्धांतों की तुलना में अधिक प्रभाव छोड़ा है। मार्क्स का मुख्य तर्क है कि उत्पादन के सामंतवादी तरीके की जगह उत्पादन के पूंजीवादी तरीके ने ली है और पूंजीवाद के अंतर्गत समाज को दो प्रमुख विरोधी वर्गों में विभाजित किया गया है। ये हैं - पूंजीवादी वर्ग या बुर्जुआ और श्रमजीवी वर्ग। मुख्य आर्थिक नियम और उत्पादन के पूंजीवादी तरीके का उद्दीपन कामगारों के अधिशेष मूल्य की सृजना। मजदूरों का अदत्त श्रम, अधिशेष मूल्य का स्रोत है।

13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मौरिसस डॉब 1963, स्टडीज इन द डेवलपमेंट ऑफ कैपिटलिज्म। लंदनः रूटलेज एंड कीगन पॉल।

गिड्डन्स एंथॉनी 1971. कैपिटलिज्म एंड माडर्न सोशल थ्योरी। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

मैकमिलन डेविड, 1971. द थाउट आफ कार्ल मार्क्स। मैकमिलन।